प्रार्थना बंद न करना हिम्मत न हारना

वो जवाब देगा ।

DAY - 16

इससे पहले, लूका *17* में यीशु ने अपने शिष्यों से भविष्य की घटनाओं और अंतिम समय के बारे में बात की थी, जब वे कठिनाई और चुनौतियों का सामना करेंगे। उन्होंने आने वाले कठिन समय और परीक्षाओं के बारे में चेतावनी दी थी, जिसमें विश्वासियों को धैर्य और निरंतरता की आवश्यकता होगी।
इस पृष्ठभूमि में, यीशु जानते थे कि उनके अनुयायी संघर्ष और निराशा का सामना कर सकते हैं, और वे प्रार्थना करने से हिम्मत हार सकते हैं। इसलिए उन्होंने अन्यायी न्यायी की यह दृष्टांत सुनाई ताकि वे समझ सकें कि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनता है, भले ही जवाब मिलने में समय लगे। वे इस दृष्टांत के माध्यम से अपने शिष्यों को यह प्रेरित करना चाहते थे कि उन्हें प्रार्थना में बने रहना चाहिए और परमेश्वर के न्याय और प्रेम पर विश्वास नहीं छोड़ना चाहिए।
इस दृष्टांत का उद्देश्य यह था कि अपने अनुयायियों को प्रार्थना में लगातार बने रहने और परमेश्वर पर अटूट विश्वास रखने के लिए प्रोत्साहित किया जाए, चाहे स्थिति कैसी भी हो।

लूका **18:1-8**

1 फिर उस ने इस के विषय में कि नित्य प्रार्थना करना और हियाव न छोड़ना चाहिए उन से यह दृष्टान्त कहा।
2 कि किसी नगर में एक न्यायी रहता था; जो न परमेश्वर से डरता था और न किसी मनुष्य की परवाह करता था।
3 और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी: जो उसके पास आ आकर कहा करती थी, कि मेरा न्याय चुकाकर मुझे मुद्दई से बचा।
4 उस ने कितने समय तक तो न माना परन्तु अन्त में मन में विचारकर कहा, यद्यपि मैं न परमेश्वर से डरता, और न मनुष्यों की कुछ परवाह करता हूं।
5 तौभी यह विधवा मुझे सताती रहती है, इसलिये मैं उसका न्याय चुकाऊंगा कहीं ऐसा न हो कि घड़ी घड़ी आकर अन्त को मेरा नाक में दम करे।
6 प्रभु ने कहा, सुनो, कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है?
7 सो क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं का न्याय न चुकाएगा, जो रात-दिन उस की दुहाई देते रहते; और क्या वह उन के विषय में देर करेगा?
8 मैं तुम से कहता हूं; वह तुरन्त उन का न्याय चुकाएगा; तौभी मनुष्य का पुत्र जब आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?

इस दृष्टांत से कई महत्वपूर्ण सीख मिलती हैं 5 बातों पे ध्यान दें:

1. निरंतर प्रार्थना का महत्व
   इस दृष्टांत में विधवा का उदाहरण यह सिखाता है कि हमें अपनी प्रार्थनाओं में लगातार बने रहना चाहिए। चाहे उत्तर मिलने में देरी क्यों न हो, हमें निरंतर और धैर्यपूर्वक प्रार्थना करते रहना चाहिए, क्योंकि परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं को सुनते हैं और सही समय पर उत्तर देंगे।

2. धैर्य और विश्वास बनाए रखना
   विधवा को बार-बार जाने के बावजूद तुरंत न्याय नहीं मिला, परंतु उसने हार नहीं मानी। इसी तरह, हमें भी धैर्य रखना चाहिए और हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। परमेश्वर के न्याय पर हमारा विश्वास हमें दृढ़ता से प्रार्थना में टिके रहने में मदद करता है।
3. परमेश्वर के प्रेम और न्याय पर भरोसा
   यदि एक अन्यायी न्यायी बार-बार निवेदन करने पर न्याय देने को तैयार हो गया, तो परमेश्वर, जो न्यायी और प्रेममय हैं, अपने बच्चों के लिए और भी अधिक प्रेमपूर्वक न्याय करेंगे। हमें विश्वास रखना चाहिए कि परमेश्वर हमारे हर संघर्ष और कठिनाई में हमारे साथ हैं।
4. आत्म-निरीक्षण और विश्वास की परीक्षा
   दृष्टांत के अंत में यीशु कहते हैं, "जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?" यह हमें आत्म-निरीक्षण के लिए प्रेरित करता है कि क्या हम सच्चे विश्वास में स्थिर हैं और कठिन समय में भी परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं।
5. प्रार्थना करने का हियाव नहीं छोड़ना
   कई बार हमारे जीवन में ऐसी कठिनाइयां और समस्याएं आती हैं जो हमारी आस्था को हिला सकती हैं। परंतु इस दृष्टांत से सीख मिलती है कि हमें प्रार्थना करने का हियाव नहीं छोड़ना चाहिए। हर परिस्थिति में हमें परमेश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए और उनसे सहायता मांगनी चाहिए।

हे प्यारे परमेश्वर,

मैं आपके चरणों में आता हूँ, आपके प्रेम और कृपा के लिए धन्यवाद करता हूँ। आपने हमें प्रार्थना का वरदान दिया है, और मैं इस अवसर का उपयोग करने के लिए आपके सामने विनम्रता से प्रस्तुत हूँ।

प्रभु, जब हम जीवन में चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना करते हैं, तो हमें हियाव और प्रार्थना में स्थिर बने रहने की सामर्थ्य दें। हमें निरंतर यह स्मरण दिलाते रहें कि आप हमारे साथ हैं और हमारी हर प्रार्थना को सुनते हैं। चाहे हमें आपके उत्तर पाने में कितना भी समय लगे, हमें आपकी योजना और समय पर अटूट विश्वास रखना सिखाएँ।

हे प्रभु, जब भी हम हिम्मत हारने लगें या हमारी आत्मा में निराशा आने लगे, तो हमें अपनी पवित्र आत्मा से नया उत्साह और शक्ति प्रदान करें ताकि हम आपके वचनों में स्थिर रह सकें। हमें उस विधवा की तरह निरंतर और बिना रुके प्रार्थना करने की सामर्थ्य दें, जिसने कभी हार नहीं मानी।

प्रभु, हमें ऐसा दृढ़ विश्वास प्रदान करें कि चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, हम हमेशा आपकी ओर देखें और आपकी ओर प्रार्थना में झुके रहें। हमें यह एहसास दिलाते रहें कि आपके प्रेम में शक्ति है, और आपकी कृपा में हम हर परिस्थिति का सामना कर सकते हैं।

हे परमेश्वर, हमें हियाव देने के लिए और हमारी प्रार्थनाओं में विश्वास बनाए रखने के लिए हम आपके आभारी हैं। आपके न्याय और दया पर हमारा विश्वास अडिग बना रहे।

यीशु मसीह के नाम में,
आमीन।

≠

Prepared for internal Circulation by Ps. Peter Benjamin. All right reserved.